22132256

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Friday 10 May 2013 (afternoon)
Vendredi 10 mai 2013 (après-midi)
Viernes 10 de mayo de 2013 (tarde)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for paper 1.
- Answer the questions in the question and answer booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

© International Baccalaureate Organization 2013

पाठांश क

साक्षात्कार

स्वामी रामदेव से भारत-दर्शन के संपादक रोहित कुमार "हैप्पी" से हुई बातचीत के मुख्य अंशः

आज की दिनचर्या और आज के परिवेश में योग का क्या महत्व है?
देखिए, आज की हो या कल की हो, व्यक्ति का शरीर जब से बना है उस शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें प्रकृति के कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है। योग प्रकृति से जुड़ी हुई वो सुंदरतम् विधा है जिससे व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है। अत: योग एक जीवन जीने की कला, योग एक जीवन जीने की विधा, योग एक वो परिकल्प है जिससे हम अपने अस्तित्व, अपनी चेतना से जुड़ते हैं। आज जो चारों तरफ प्रदूषण है, जो आज की प्रतियोगिताएं हैं, प्रतिस्पर्धाएं हैं, उन प्रतियोगिताओं और प्रतिस्पर्धाओं में जो व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है तो उसके लिए भी योग एक बहुत सशक्त माध्यम है जो कि आंतरिक उर्जा प्रदान करता है।

आप योग द्वारा बहुत सी बीमारियों का इलाज कर रहे हैं। क्या योग द्वारा कैंसर और तनाव जैसी बिमारियों का भी इलाज किया जा सकता है?
पहली बात तो यह है कि कैंसर बहुत बड़ी बिमारी है और तनाव तो एक सामान्य चीज है। इन बिमारियों का भी योग द्वारा हम इलाज करते हैं, उसके साथ हम आयुर्वेद चिकित्सा का आशय लेते हैं। तनाव के लिए तो योग एक सबसे मूल मँत्र है। व्यक्ति की तमाम समस्याओं का योग द्वारा समाधान होता है और असाध्य रोगों का भी।

आप अपने कार्यक्रमों द्वारा अंधविश्वास भी दूर कर रहे हैं। सुनते हैं आप अंधविश्वास नहीं करते और भूत-प्रेत, ग्रह-दिशा इत्यादि में भी आपका अधिक विश्वास नहीं?
नहीं, हम इसमें विश्वास रखते ही नहीं। भूत-प्रेत, दिशाओं का चक्कर, ग्रहों का चक्कर और हमारे यहाँ समाज में धर्म के नाम पर जो अँधविश्वास किसी भी रूप में प्रचलित है हम उसका प्रखर विरोध इसलिए करते हैं कि अँधविश्वास हमारे धर्म के हिस्से कभी रहे ही नहीं।

भारत जैसी महार्षियों और देव भूमि पर इतने भ्रष्टाचार फैलने का आप क्या कारण समझते हैं?
देखिए, सब चीजे हमारे विचारों और संकल्प से जुड़ी हुई हैं। जब हमारा संकल्प पवित्र होता है तब सब कुछ सही हो जाता है। योग के साथ-साथ हम देश को इन मुद्दों से भी जोड़ते हैं कि यह देश दोबारा से अपनी प्राचीन साँस्कृतिक पहचान को - सत्य, अहिंसा, ईमानदारी और इंसानियत इन मूल्यों को दुबारा अपनाये। तो फिर यह देश आज भी महान है, कल भी महान था और कल और महान ही बनेगा।

भारतीयों को आप योगा और अध्यात्म का क्या संदेश देना चाहेंगे?
योग बोलो, योगा नहीं। योग हमारी भारतीय सँस्कृति का शब्द है। योगा कहने से हमारे भारतीय मूल का अपभ्रंश हो जाता है। भारतीयों को भारत माता को नहीं भूलना चाहिए। भारत माता से मतलब भारत की परम्पराएं, भारत की आस्थाएं, भारत का अध्यात्म, भारत की मर्यादाएं। उन सब चीजों को हमें याद रखना चाहिए। और इसी का नाम भारत है।

http://www.bharatdarshan.co.nz (2011)

पाठांश ख

बदलते रिश्ते

चित्रा मुदगल द्वारा लिखित एक लघु कथा -

लगभग बाईस दिन तक “कोमा” में रहने के बाद जब उसे होश आया था तो जिस जीवनदायिनी को उसने अपने करीब, बहुत निकट पाया था, वे थीं, मारथा मम्मी। अस्पताल के अन्य मरीज़ों के लिए सिस्टर मारथा। वह पुणे जा रहा था... खंडाला घाट की चढ़ाई पर अचानक वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। ज़ख़्मी अवस्था में नौ घंटे तक पड़े रहने के बाद एक यात्री ने अपनी गाड़ी से उसे सुसान अस्पताल में दाखिल करवाया... पूरे चार महीने बाद उसे अस्पताल से छुट्टी मिली। चलते समय वह मारथा मम्मी से लिपट कर बच्चे की तरह रोया। उन्होंने उसके माथे पर ममत्व के सैंकड़ो चुंबन टाँक दिए- “भगवान् भला करें तुम्हारा मेरे बच्चे....।” डॉ. कोठारी से उसने कहा भी था, “डॉक्टर साहब! आज अगर इस अस्पताल से मैं जिंदा लौट रहा हूँ तो आपकी दवाईयों और इंजक्शनों के बल पर नहीं, मारथा मम्मी के प्यार के बल पर।”

उस रोज़ वे उसे गेट तक छोड़ने आई थीं और जब तक उसकी गाड़ी अस्पताल के गेट से बाहर नहीं हो गई, वे अपलक खड़ी विदाई में हाथ हिलाती रही थीं ...

वही मारथा मम्मी... आज जब अरसे बाद वह उनसे वार्ड में मिलने पहुँचा तो उन्हें देखकर ख़ुशी से पगला उठा। वे एक मरीज़ के पलंग से सटकर बैठी हुई थी। उन्होंने उसकी कलाई थामी, धड़कनों का अंदाज़ा लगाया और उसे हौले से बिस्तर पर टिका दिया। उसने अचानक पीछे से उन्हे बाजुओं में उठा लिया।

“अरे, अरे, क्या करते हो तुम... मूर्ख..... छोड़ो मेरे को! ये अस्पताल है.... यहाँ ऐसा नहीं करते” वह सकपका उठा उन्हें फर्श पर खड़ा करते हुए उसने अचरज से मारथा मम्मी को देखा, “मैं आपका बेटा अशोक, मम्मी पहचाना नहीं आपने मुझे...!

“पहचाना, पहचाना... पर अभी मेरे पास समय नहीं... ड्यूटी पर ऐसे नहीं मिलने आते। अभी जाओ तुम... देखते नहीं मरीज़ कितनी तकलीफ में है...” उन्होंने उसे तिक्त स्वर में झिड़का।

वह उनके अनपेक्षित व्यवहार से स्तब्ध हो उठा, तिलमिलाया-खिसियाया-सा फ़ौरन मुड़ने लगा कि तभी उसी मरीज़ की प्राणलेवा कराह सुनकर क्षणांश को ठिठक गया। उसके पपड़ियाए होंठ पीड़ा से बिलबिलाते बुदबुदा रहे थे, “माँ... ओ... मा... हा... आ...”

“मेरे बच्चे मैं तुम्हारे साथ हूँ। हिम्मत रखो... हिम्मत रखो...” उसकी मारथा मम्मी अत्यंत स्नेहिल स्वर में उस मरीज़ का सीना सहला रही थी।

वह मुड़ा और तेज़ी से वार्ड से बाहर हो गया।

विविधा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (2002)

पाठांश ग

मछली मछली कितना ज़हर

पश्चिमी बंगाल के पसंदीदा आहार मछली की लोकप्रिय किस्में प्रदूषित हो गई हैं, पानी में भी और बाज़ार में भी जहाँ इनकी बिक्री की जाती है। 63 लाख टन वार्षिक उत्पादन के चलते भारत दुनिया भर में तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है। प्रयोगशाला परिणामों ने साबित कर दिया है कि बंगाल की अधिकतर मछलियाँ पारे से प्रदूषित पाई जाती हैं।

चूँकि पश्चिमी बंगाल में पारे का प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुँच गया है, विशेषज्ञ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं की चेतावनी दे रहे हैं। प्रदूषित मछलियों में हिलसा, टेंगरा और भेटकी जैसी लोकप्रिय प्रजातियां शामिल है। पर्यावरणविदों के अनुसार 50 किलोग्राम वज़न वाले मनुष्य के लिए पारा उपभोग की सीमा 5 माइक्रोग्राम तय की है। जांचकर्ताओं की रिपोर्ट के अनुसार पश्चिम बंगाल में एक हफ्ते में प्रति व्यक्ति एक किलो तक मछली खाई जाती है, जिसका अर्थ यह हुआ कि शरीर में जाने वाले पारे की मात्रा खतरे की सीमा से बहुत ऊपर है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि शरीर का वज़न जितना कम होगा, खतरा उतना अधिक होगा। इसमें सबसे अधिक नुक्सान बच्चों को ही उठाना पड़ता है, क्योंकि प्रति सप्ताह मछली उपभोग को सहने की क्षमता शरीर के वज़न के अनुपात में ही होती है। इसलिए वज़न के अनुसार ही मछली खाने और उसी अनुपात में प्रदूषण झेलने की क्षमता होती है।

विलुप्त होने के कगार पर पहुंची हिलसा मछली की प्रजाति को बचाने के लिए ठोस कदम न उठाए गए तो कुछ ही दशको में यह विलुप्त हो जाएगी। केन्द्रीय मत्स्य पालन विभाग के अनुसार सामान्यतः मुखपोरा नाम से जानी जाने वाली हिलसा टोली तो पहले से ही विलुप्त हो चुकी है।

पानी को प्रदूषित करने में औद्योगिक कचरे का सर्वाधिक योगदान है। इसके इलावा दांतों में भरी जाने वाली भरावन (फिलिंग) जैसी छोटी चीज़ भी पानी को प्रदूषित करने में भूमिका निभाती है। सर्वाधिक प्रचलित चांदी का पारदधातु मिश्रण दांतों में भरा जाता है जिसमें पारा भारी मात्रा में होता है। अंततः वह पानी में ही जाता है। अंदाज़न, देश भर में सालाना 300 किग्रा पारा जल स्रोतों में गिरता है, इस धातु के विषैलेपन को देखते यह बहुत अधिक मात्रा है। पारा वातावरण को प्रदूषित करने वाली सबसे खतरनाक चीज़ों में एक है। यहाँ तक कि जब एक थर्मामीटर टूटता है तो भी भारी जोखिम जुड़ा होता है, लेकिन अधिकतर लोग इसके दूरगामी परिणामों से परिचित नहीं है। जब पारा वातावरण में फैलता है तो यह मिथेलेटेड मर्करी में बदल जाता है, और जलस्रोत्रों में जाकर मिल जाता है। वहां से मछलियों के शरीर में प्रवेश कर जाता है और जब मनुष्य इसे खाते हैं तो यह मानव शरीर में पहुँच जाता है। स्नायु विकार, याददाश्त कम होना, जन्म से पहले की जटिलताओं जैसे विकारों की और दीर्घकालीन मस्तिष्क विकार की मूल वजह बन जाता है। लेकिन इन तमाम बातों से बेखबर पश्चिम बंगाल जाने वाले पर्यटकों के लिए मछली सारे व्यंजनों का सरताज बनी रहेगी।

इंडिया टुडे, 21 अप्रैल (2010)

पाठांश घ

क्या प्रौद्योगिकी नैतिक-रूप से तटस्थ है

इसमें संदेह नहीं होना चाहिए कि बिजली, दूर-संचार, चिकित्सा, विमान, टीवी आदि के बिना हम आज के समृद्ध सुविधापूर्ण तथा दीर्घ जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन यह भी उतना ही स्पष्ट है कि इनसे नई-नई बीमारियाँ पैदा हो रही हैं; वीभत्स तथा नये अपराध बढ़ रहे हैं, प्रदूषण से प्रलय का संकट निकट आ रहा है, परिवार खंडित हो रहा हैं। क्या इसमें बहुत उत्पादनवाली नवीन प्रौद्योगिकी जैसे कि टीवी की निर्माता प्रौद्योगिकी का दोष है या उसके उपभोग करने वाले मानव का? भारत में नानी द्वारा बच्चों को जो संस्कृति दी जाती थी, वह समाप्त हो रही है। इस पर गहन विचार की आवश्यकता है।

परमाणु बम के निमार्ण तथा दुरूपयोग में विज्ञान का दोष कतई नहीं, वरन् मानव का है। यह मानव की प्रकृति में है या एक तरह से कहें तो उसकी विवशता है, वह भौतिक सुख भोगने के लिए मजबूर है। वह खुशी-खुशी प्रौद्योगिकी व भोगवाद की मृगतृष्णा के आर्कषण में फँसता जा रहा है।

बिरले ही मनुष्य हैं, जो इस भौतिक छलावे को “देख” लेते हैं। हर आदमी कोल्हू के बैल समान चक्कर लगा रहा है। भोग करने के लिए दूसरों से अधिकाधिक उत्पादन करवाने में अर्थात् उसका और प्रकृति का शोषण करने में तथा अपना शोषण करवाने में मस्त है। वास्तव में टीवी ने मधुर चालाकी से मनुष्य का “सोचना” ही कुंद कर दिया है। उसे वह नकली जीवन की घटनाओं में उलझाकर रखता है और उनके तथा टीवी आधुनिक प्रौद्योगिकी का राजदूत है। जो रंगीन विज्ञापनों के द्वारा उसमें अधिकांशतया नकली आवश्यकताएँ पैदा कर रहा है और समाज की सोच पर नियंत्रण कर रहा है। हमारी प्रकृति है कि दृष्टिक घटनाएँ अन्य ऐंद्रिक घटनाओं की अपेक्षा हमारे मन पर सरलतापूर्वक हावी हो सकती हैं। इसलिए नाच-गानवाले कार्यक्रम सर्वाधिक लोकप्रिय होते हैं। अब बेचारे सामान्य मनुष्य उस ईडियट बॉक्स के सामने बैठकर स्वयं तो मोटे, बीमार और मंदबुद्धि बन ही रहे हैं।

टीवी एके-47 से अधिक खतरनाक हो सकता है, और हो रहा है विशेषकर भारत में जनमानस के लिए अफीम है। जो प्रौद्योगिकी हमारी विवशता का लाभ उठाकर ऐसे दुःखद भोगवाद को जन्म देती है, वह हमारे ’दुर्भाग्य’ से, नैतिक रूप से तटस्थ नहीं है। हमें अपनी सीमाएँ जानना, अपनी विवशताओं को जानना अत्यंत आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में जीवन दर्शन वह है, जो हमें टीवी तथा प्रौद्योगिकी का गुलाम न बनाते हुए, उसे कूड़ेदान में न फेंककर, उनके साथ मानव बनकर रहने की शक्ति प्रदान करे तथा आधुनिक जीवन का मार्ग प्रशस्त करे।

विश्वमोहन तिवारी http://www.abhivyakti-hindi.org (२७ अगस्त २०१२)

पाठांश ङ

पान: चबाने के कुछ तथ्य...

[– X –]

पान में ऐसी क्या खासियत है कि इसके इतने सारे चाहने वाले है? पान के सच्चे चाहने वालों से यह जवाब आयेगा कि यह मुँह को साफ रखता है और साँसों में ताज़गी लाता है। पान न खाने वाले लोग पान चबाने को एक बुरी लत मानते हैं।

[– 1 –]

दिल के आकार वाले पत्ते का यह पौधा तीन महीनें में ही 10–15 फीट ऊँचा हो जाता है। पान का पौधा बहुत नाज़ुक होता है। यह दक्षिण और दक्षिणपूर्वी एशिया में हमारे देश, श्रीलंका, वियतनाम और मलेशिया में होता है।

[– 2 –]

चलिए, थोड़ी छान-बिन की जाये - तो ज़रा पान को खोलिए: इसमें चूना, कत्था, सुपारी, लौंग और इलायची (या थोड़ा तम्बाकू) मिलेंगे। चूने का एक महत्वपूर्ण कार्य है: यह जीभ से जल्दी ही सोख कर रक्त कोशिकाओं में फैल जाता है। तो अब सब कुछ जानने के बाद, अब जानिए पान असलियत में क्या कर सकता है? यह एन्टिसेप्टिक है, खाना हज़म करने में सहायता करता है और सासों को तरोताज़ा रखता है। लेकिन एक बात कह दूँ कि ज़्यादा समय तक पान खाने से मुँह में छालों और मसूड़ों की सड़न से सभी दाँत को खोने की संभावना बढ़ जाती है। पान चबाने से कुछ अच्छे प्रभावकारी कार्य भी होते हैं, जो महत्वपूर्ण हैं।

[– 3 –]

पान को हजारों वर्षों से चबाया जा रहा है। पान के पत्ते का व्यवहार दो हज़ार साल पहले से हुआ है। इसका उल्लेख श्रीलंका की इतिहास की पुस्तक महाभस्म में मिलता है जो पाली में लिखा है। सत्य तो यह है कि पान का संबंध राजकीय परिवार से है और यह राजकीय शौक माना जाता है। पान खाने की प्रथा मुगल बेगम नूरजहाँ से लोकप्रिय हुई। उस वक्त औरतें प्राकृतिक वस्तुएँ श्रृंगार-प्रसाधन में इस्तेमाल करती थीं।

[– 4 –]

हिन्दुओं के लिए पान का विशेष स्थान है। पान का पत्ता और सुपारी परम्परागत रूप से हिन्दुओं के किसी भी अनुष्ठान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। दक्षिण भारत में पान और सुपारी, हल्दी और कुमकुम विवाहित महिलाओं को दिये जाते हैं खास नवरात्री के दौरान “वरलक्ष्मीपूजा” के समय या किसी मांगलिक कार्य के अवसर पर जैसे शादी या त्योहार। राजस्थानी विवाह के समय वर और बाराती तभी खाते है जब रुपया दिया जाता है और वधु पक्ष के बड़े मेहमानों को पान खिलाते है।

[– 5 –]

पान एक ऐसा खाद्द-सामग्री है जिस पर कई गीत लिखे जा चुके हैं। कौन भूल सकता है -‘खई के पान बनारस वाला’? आप कलकत्ता (गहरे हरे रंग का) के तुलना में बनारसी पान (हल्का हरा) और मघई (दोनों गहरे और हल्के हरे रंग में होता है लेकिन कलकत्ता और बनारसी पान की तुलना में छोटा होता है) पान के बीच चुनाव कर सकते हैं। तीनों में कलकत्ता पान की बिक्री ज़्यादा होती है। सुगंध वाले पान में बंगाल का देसी महोबा का स्थान विशेष है। पान में अच्छे क्वालिटी के पान को मघई कहते हैं जो बिहार के पटना, मगध प्रांत में होता है।

इसमें कोई तर्क नहीं कि पान का बहुत बड़ा बाज़ार है, लेकिन सीमा से अधिक उपयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

www.sanjeevkapoor.com (2011)